आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023

Received: 03/11/2023; Accepted: 09/11/2023; Published: 26/12/2023

दूरदर्शन में हिंदी भाषा का अस्तित्व एवं प्रासंगिकता

रूबी पाण्डेय
हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हिंदी विभाग)
rubipandeycuh@gmail.com
9140394739

रूबी पाण्डेय, **दूरदर्शन में हिंदी भाषा का अस्तित्व एवं प्रासंगिकता** ,आखर हिंदी पत्रिका खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023 ,(475- 479)

कला के क्षेत्र में हिंदी भाषा का प्रयोग बहुत ही खूबसूरती से किया जाता है और यह भाषा को मजबूत बनाती है । दूरदर्शन में धारावाहिक और भाषा का संबंध अभिन्न है । यह एक दुसरे के पूरक हैं क्योंकि दूरदर्शन दृश्य और श्रव्य पर आश्रित है । समाज में घटित घटनाओं को हम पात्रों, वेशभूषा और संवादों के माध्यम से ही दूरदर्शन पर देखते हैं । हिंदवी शब्दकोश के अनुसार दूरदर्शन का हिंदी अर्थ है कि "विद्युत तरंगों की मदद से बहुत दूर के दृश्य को प्रत्यक्ष रूप से देखने की प्रणाली अर्थात दूर की चीज देखना ही दूरदर्शन है ।"[1] भाषा के बिना दूरदर्शन नीरस और उबाऊ सा प्रतीत होता है । दूरदर्शन को सही अर्थो में प्रस्तुत करने का शसक्त माध्यम भाषा है । हिंदी दूरदर्शन के धारावाहिकों में भाषा के द्वारा 'संवाद' एक जीवंत रूप में प्रस्तुत होता है । धारावाहिक या कार्यक्रम में संवाद की भाषा 'हिंदी' मधुर और कर्णप्रिय होती है । हिंदी भाषा को देश के कोने-कोने तक पहुँचने के लिए दूरदर्शन रूपी रथ पर सवार होना पड़ा है । इस तरह हिंदी भाषा देश के कोने-कोने तक पहुंची । आज मनुष्यों ने वैज्ञानिक स्तर पर भले ही उन्नति कर ली हो लेकिन इस उन्नति और विकास की प्रक्रिया में वैज्ञानिकों ने कई वर्ष पूर्व ही अपने नए-नए अविष्कारों से लोगों को सदैव आश्चर्य में डाला हैं । इनमें से मानव को मनोरंजन देने वाली कई साधन जैसे रेडियो, सिनेमा दूरदर्शन आदि का आविष्कार हुआ । वैसे हमारे समाज का सशक्त माध्यम सिनेमा है फिर भी आधुनिक वैज्ञानिक अविष्कारों में सबसे अधिक आकर्षण का केंद्र है-दूरदर्शन । यह मनोरंजन के साथ-साथ समाज के सभी पक्षों को दूरदर्शन के जरियें हमारे समक्ष ध्वनि-चित्र सहित प्रस्तुत करता है ।

दूरदर्शन केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं बल्कि ज्ञान का पिटारा भी है । यह आज निम्न वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक के हर घरों में अपनी एक खास जगह बना चुका है । इसके माध्यम से घरों में सुबह भजन की शुरुआत से लेकर 24 घंटे मनोरंजन और ज्ञानवर्धन जानकारी उपलब्ध होती हैं । जिस प्रकार सिनेमा मानव-मनोजगत पर प्रभाव डालती है ठीक उसी प्रकार छोटे पर्दे दूरदर्शन के प्रति भी विशिष्ठ दर्शक समूह आकर्षित होते हैं । जिसका कारण है कि यह समय समय पर सूचना देना, शिक्षित करना, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय एकता की भावना, सामाजिक कल्याण को प्रोत्साहन देना, कृषि विकास, पर्यावरण संरक्षण, खेल, संस्कृति, सांस्कृतिक धरोहर, मनोरंजन के साथ-साथ भाषा की विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं । दूरदर्शन दुनिया जहां की खबरे देने और राजनितिक गतिविधियों की

सूचनाएं उपलब्ध कराने एवं समाज से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचना जैसे प्रमुख आर्थिक और सामाजिक मुद्दों से भी हमें अवगत कराती हैं। दूरदर्शन आज यह हमारे जीवन का अहम् हिस्सा बन चुका है। डॉ० पवन सिंह मलिक ने अपने लेख 'दूरदर्शन सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि संस्कार की पाठशाला भी हैं' में लिखा है कि, "इसके अविष्कार का श्रेय 'जॉनी लोगी बेयर्ड' नाम के वैज्ञानिक को जाता है। जिन्होनें सन 1924 में पहली बार टीवी का निर्माण करके इतिहास रच दिया। भारत में टेलीविज़न की शुरुआत यूनेस्को की एक शैक्षणिक परियोजना के तहत 15 सितंबर 1959 के तहत हुई थी जिसका उदघाटन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद ने दिल्ली में किया जिसका उद्देश्य शिक्षा, भाषा, और सामुदायिक विकास को प्रोत्साहन करना था। अप्रैल 1976 में टेलीविजन इंडिया से नाम बदलकर दूरदर्शन किया गया उस दौरान भारत में इंदिरा गांधी की सरकार थी। इन्होनें दूरदर्शन के महत्व को समझते हुए इसके विकास के लिए कार्यक्रम सुनिश्चित करने का आदेश दिया।"

शुरूआती दिनों में इनमें केवल 18 टेलीविजन सेट लगे थे जो कि केवल दिल्ली के आसपास के कुछ क्षेत्रों में ही देखा जाता था परंतु 1982 ई० में दिल्ली में आयोजित एशियाई खेल के कारण दूरदर्शन देश भर के शहरों में प्रसारित हुआ। आज लगभग कई सौ से अधिक धारावाहिक दूरदर्शन के माध्यम से देखा जाता है जिसका प्रभाव सामाजिक गतिविधियों के साथ हिंदी भाषा और क्षेत्रीय भाषाओं पर भी पड़ा। परिणामतः कई भाषाओं में धारावाहिक और टेलीफिल्म्स का निर्माण हुआ है जिसके कारण आज धारावाहिक अपने सीमित भाषा क्षेत्र से निकलकर खड़ी बोली हिंदी, असमिया, बंगाली, गुजराती, मराठी, राजस्थानी, तमिल, उड़िया आदि भाषाओं में प्रसारित होने लगी है। भारतीय 22 भाषाओं में हिंदी भाषा एक बड़े समाज की भाषा है जिसकी भाषायी स्थिति और हिंदी के स्थान को देखकर स्पष्ट होता है की हिंदी आज भारतीय समाज के मध्य राष्ट्रीय संपर्क की भाषा में अपना स्थान बना चुकी है। हिंदी भाषा की इस अविरल धारा की मुख्य विशेषता है कि यह विश्व की 16 प्रमुख भाषाओं की सूची में शामिल है। राकेश शर्मा 'निशीथ' ने अपने लेख 'विश्वभाषा की ओर हिंदी के बढ़ते कदम' में लिखा है, "विश्व में भाषाओं की रैंकिंग अमेरिका में एथ्नोलोग नाम की संस्था करती है। यह संसार की सभी भाषाओं के आंकडे के आधार पर सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा को स्थान प्रदान करती है। हम सभी भारतीयों के लिए गर्व की बात है कि इस रिपोर्ट में जनतांत्रिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि उसके बोलने-समझने वालों की संख्या विश्व में तीसरा स्थान रखती है और हिंदी तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है।"[3]

आज भारत के एक छोर से लेकर दूसरी छोर तक हिंदी प्रसारित है और इतने बड़े भू-भाग में हिंदी का प्रयोग स्वाभाविक रूप से अनेक बोलियों के माध्यम से किया जाता है। हिंदी-क्षेत्र अति विस्तीर्ण होने के कारण कुछ भाषावैज्ञानिकों द्वारा संभवतः कई उपवर्ग बनाये गए हैं- पूर्वी हिंदी, पश्चिमी हिंदी, बिहारी हिंदी, रास्थानी हिंदी। पूर्वी हिंदी की तीन बोलियाँ अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी है। पश्चिमी हिंदी में ब्रजभाषा, कौरवी, हरियाणवी, कन्नौजी, बुंदेली तथा बिहारी हिंदी के अंतर्गत मैथिली, मगही, भोजपुरी इत्यादि शामिल बोलियाँ शामिल हैं। भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ ही दूरदर्शन धारावाहिक में इन बोलियों का विशेष महत्त्व एवं योगदान है जो आगे चलकर दूरदर्शन पर इन बोलियों की बुनियाद पर कई चैनल का प्रस्फुटन हुआ और बिहारी मैथिलि, भोजपुरी, बुन्देली, ब्रज आदि क्षेत्रीय भाषाओं में भी धारावाहिक का पदार्पण हुआ। हिंदी भाषा की उपबोलियों के महत्व को देखते हुए हिंदी भाषी धारावाहिकों का प्रसारण किया गया, जो हमारे देश के गौरवशाली इतिहास व उसके उत्थान पतन की कहानी भारतीय भाषा हिंदी में उद्यत हुई। वर्तमान समय में भारत का ऐसा कोई प्रान्त नहीं है, जहाँ हिंदी

भाषा में अध्ययन-अध्यापन और साहित्य सृजन के कार्य नहीं हो रहे हैं। हिंदी भाषा हर क्षेत्र में अपना अस्तित्व स्थापित कर चुकी है जिसके कारणवश हिंदी साहित्य सृजन का कार्य बड़े मापदंडों में किया जा रहा है। आज हिंदी साहित्य लेखन की परंपरा समृद्ध है और इस परंपरा को समृद्ध एवं उन्नत बनाने के लिए आदिकाल से आधुनिक काल तक के कवियों और लेखकों द्वारा साहित्यिक सृजन किया जा रहा है। इन हिंदी साहित्यिक सृजन से आकृष्ट दूरदर्शन भी रहा है तथा समय-समय पर साहित्यिक कृतियों पर आधारित कई निर्देशकों द्वारा हिंदी भाषी धारावाहिकों का प्रसारण भी किया गया जिससे हिंदी हमेशा अपने शीर्ष स्थान पर रही है। सन 1987 में हिंदी भाषा के महत्त्व को देखते हुए हिंदी भाषी 'बुनियाद' नामक धारावाहिक का प्रसारण हुआ जो भारत पाकिस्तान के बटवारे के विस्थापन का भयावह दृश्य है। यह धारावाहिक हिंदी लेखक मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास बुनियाद पर आधारित है। सन 1988 श्याम बेनेगल के निर्देशन में पंडित जवाहर लाल नेहरू की पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया' पर आधारित धारावाहिक 'भारत की खोज' का प्रसारण किया गया। यह हिंदी भाषी धारावाहिक दर्शकों में खूब पसंद किया गया था। जिसमें भारत के प्राचीन इतिहास से लेकर 1947 तक के कालावधि को शामिल किया गया है। ज्योति सरूप के निर्देशन में बनी धारावाहिक रानी केतकी की कहानी हिंदी लेखक 'सैयद इंशाअल्ला खां' की कहानी पर आधारित है। यह हिंदी गद्य के प्रारंभिक दौर (19 वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ) में लिखी गयी थी जिस समय पद्य अपनी सुदृढ़ परंपरा में थी। हिंदी साहित्य लेखन पर ब्रज और अवधी के प्रारंभिक प्रभाव से हिंदी गद्य की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। 'रानी केतकी की कहानी' धारावाहिक में कथानक और संवाद की भाषा ब्रज, अवधी और प्रारंभिक खड़ी बोली की पुट देखने को मिलती है। इस कहानी में प्रेम, रोमांस, युद्ध, हिंसा और तिलिस्मी-जादूगरी के साथ एक राजकुमार और राजकुमारी का प्रेम-प्रणय है। हिंदी के प्रचार-प्रसार से लेकर हिंदी के उत्थान में अनेक दूरदर्शन के धारावाहिक निर्देशकों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है, जहाँ उन्होंने हिंदी भाषी पटकथा का सृजन किया वही हिंदी के महत्त्व को बताने के लिए बड़े-बड़े लेखकों के कृतियों पर आधारित धारावाहिकों का निर्माण भी किया है जो आज भी अपनी भाषा एवं संवाद की खूबसूरती के कारण प्रासंगिक हैं। सन 1987 में दूरदर्शन पर प्रसारित हिंदी भाषी टीवी शो श्रीकांत शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के 1917-1933 के चार खण्डों वाले उपन्यास श्रीकांत पर आधारित है। लाला श्रीनिवासदास द्वारा रचित उपन्यास 'परीक्षा गुरु' पर आधारित हिंदी भाषी धारावाहिक 'परीक्षा गुरू' संजय डी० सिंह के निर्देशन में बनी थी जिसकी हिंदी भाषा सरल एवं बोलचाल की भाषा के अनुरूप है। पीके मोहंती द्वारा निर्देशित सन 1993 में बनी हिंदी भाषी धारावाहिक पचपन खम्भे लाल दीवारें उषा प्रियंवदा द्वारा लिखित पुस्तक 'पचपन खम्भे लाल दीवारे' का रूपांतरण है।

1990-91 के दौरान पंचतंत्र के मूल कथाओं पर आधारित प्रेरणादायक हिंदी भाषी धारावाहिक 'पंचतंत्र'अपने समय की बहुत प्रसिद्ध एवं पसंदीदा रही इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसका संवाद-पटकथा और शीर्षक गीत डॉ० राही मासूम रज़ा के द्वारा लिखा गया है। राही मासूम रज़ा हिंदी भाषा के सुविख्यात उपन्यासकार तथा कहानीकार है इनके द्वारा रचित पुस्तकों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह हिंदी भाषा के प्रति कितने सजग एवं सचेत थे जिसका दृष्टांत हम पंचतंत्र धारावाहिक में देखते है। इन्होंने भाषा के महत्व को ध्यान में रखकर इस धारावाहिक की पटकथा एवं संवाद की भाषा खड़ी बोली हिंदी में किया ताकि इन कहानियों के माध्यम से दिया जाने वाला संदेश देश के प्रत्येक मानवमन को प्रभावित कर सके। सन 1988 ई० में गुलज़ार के निर्देशन में बनी हिंदी मिश्रित उर्दू भाषी धारावाहिक 'मिर्जा ग़ालिब' उर्दू के प्रसिद्ध शायर मिर्ज़ा ग़ालिब के बचपन से लेकर मृत्यु तक के जीवन की झलक है।

भीष्म साहनी द्वारा लिखित उपन्यास 'तमस' पर आधारित1987-1988 के दौरान गोविंद निहलानी के निर्देशन में ऐतिहासिक घटनाओं पर हिंदी भाषी धारावाहिक तमाम विरोधों के बावजूद दूरदर्शन पर प्रसारित किया गया। मनोहर श्याम जोशी द्वारा लिखित लघु उपन्यास 'हम लोग' पर आधारित पी० कुमार वासुदेव के निर्देशन में हिंदी भाषी धारावाहिक 'हम लोग' 1980 के दशक के एक भारतीय मध्यवर्गीय परिवार और उनके दैनिक संघर्षों और आकांक्षाओं की कहानी है। अनुमानतः ऐसा कहा जाता जाता हैं कि हिंदी के महत्त्व और उसके प्रचार-प्रसार को केंद्र में रखकर यह हिंदी की पहली धारावाहिक नाटक शृंखला में शामिल है। जो अपने समय के यथार्थ और परिस्थियों को सहज एवं सरल भाषा हिंदी में चित्रित करते हैं।

जहाँ एक ओर हिंदी भाषा को लेकर अहिंदी भाषी क्षेत्रों में विवाद अपनी चरम सीमा पर थी वही दूसरी तरफ पुरे देश में हिंदी भाषा के महत्व को देखते हुए कई निर्देशकों द्वारा विशेष कार्यक्रम शुरू किये गए जो अपने युग-विशेष की गाथा एवं हिंदी भाषा की शक्ति का प्रतिपादन कर रही थी जैसे-डॉ० चंद्रप्रकाश द्विवेदी के निर्देशन में 'चाणक्य', सत्यजित रे के निर्देशन में 'सदगति', गुलज़ार के निर्देशन में प्रेमचंद के रचनाओं पर आधारित हिंदी भाषी धारावाहिक 'तहरीर', गूंगी तारीख, संग्रहालय के गलियारों से, तारीख गवाह है, नरसिम्हन के निर्देशन में 'मालगुड़ी डेज़', देवकीनंदन खत्री के उपन्यास पर आधारित हिंदी भाषी 'भूतनाथ', नीरजा गुलेरी के निर्देशन में देवकीनंदन खत्री के उपन्यास पर आधारित हिंदी भाषी धारावाहिक 'चंद्रकांता', शंकर सुहेल के निर्देशन में बनी धारावाहिक 'धरती के लाल', 'लोकमान्य', कपालकुंदला , मुल्ला नसरुद्दीन, शाल्मती, सूरदास, कृष्णकांत का वसीयतनामा, विद्रोह, मोरारजी, पहल, संक्रांति, सावित्रीबाई फूले, महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव, आनंदी गोपाल, लोकमान्य, कहानी वीर क्रांतिकारियों की, चित्रांगदा, प्रसाद की चर्चित कहानी, परसाई जी कहते है, गुलज़ार, रेत पर लिखे नाम, रानी केतकी की कहानी, मिट्टी के रंग, रविंद्रनाथ टैगोर के उपन्यास 'गोरा' पर आधारित धारावाहिक गार्गी सेन और सोमनाथ सेन के निर्देशन में बनी 'गोरा',कादंबरी, राजतारंगिनी, ग़दर की गूँज, मोरारजी, चेख़व की दुनिया, ब्योमकेश बक्षी, स्वराजनामा, सांझा चूल्हा, संक्रांति, शेरशाह सूरी, कहानी शाहजहानाबाद की, मशाल, हज़ार घोड़ो की सवार, कथा सरिता आदि धारावाहिकों ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देती है और हिंदी भाषा के विकास में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई है।

सन 2020-21 के दौरान भारत में कोरोना संक्रमण और लॉकडाउन के बीच स्वास्थ्य मनोरंजन देने के उद्देश्य से फिल्ममेकर बी० आर० चोपड़ा के निर्देशन में महाभारत और रामानंद सागर के निर्देशन में रामायण, श्रीकृष्ण जैसे कई धारावाहिकों का पुनः प्रसारण किया गया। कोरोना के चलते जब लोग अपने घरो में कैद थे और दिन पर दिन उसकी भयावह प्रकोप से लड़ रहे थे तथा इन परिस्थितियों के दौरान जहाँ हमारी क्षति हुई उसके साथ ही हमें कुछ सकारात्मक वातावरण देखने को भी मिलता है जिसके कारण हमें परिवार के महत्व, प्रेम व रिश्तों में पवित्रता बनाए रखना तथा चरित्र में पारदर्शिता जैसे कई मानवीय मूल्यों से परिचय इन धारावाहिकों के द्वारा देखने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ। यह धारावाहिक मानवीय मूल्य और नैतिक कर्त्तव्य के साथ-साथ हिंदी भाषा के मानक रूप को भी दर्शाती है। इन धार्मिक धारावाहिकों में हिंदी के शुद्ध उच्चारण के माध्यम से हमारी नयी पीढ़ी हिंदी भाषा के महत्त्व और उसके मूल्यों से परिचित हुए। इस तरह नयी पीढ़ी के बच्चों को अस्सी तथा नब्बे के दशक की यादों को अपने पुरे परिवार के साथ जीने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इन धारावाहिक में प्रयोग सहज और सरल हिंदी भाषा का संवाद दर्शकों के दिलों में गहरी छाप छोड़ देती है इसके साथ ही यह दूर देश बैठे अप्रवासीय भारतीय को भी अपने भाषा को पुनः आत्मसार करने का अवसर प्रदान करती है। अतः उन्हें अपने देश की

मिटटी से सदैव जोड़ी रहती है। सिनेमा के साथ-साथ छोटे पर्दे की धारावाहिकों में भी हिंदी भाषा की गूँज शुद्ध और आलंकारिकता सुनाई देती है। आज हिंदी भाषा में प्रसारण करने वाले अनगिनत चैनलों की सूची जिनमें से 'संसद टीवी' नामक चैनल एक ऐसा मंच है जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक, समाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश मुख्यतः मानक हिंदी भाषा डालते हैं।

डॉ० चंद्रप्रकाश द्विवेदी के निर्देशन में हिंदी भाषी कार्यक्रम सुराज्य संहिता प्रारंभ किया। यह वैदिक युग से लेकर वर्धन वंश तक के भारतीय शासकों के जीवन, राज्य और उनके शासन तक के इतिहास के विषय में जानकारी प्रदान करता है जो कि दर्शकों के मध्य बहुत पसंद एवं सराहा जाने वाले कार्यक्रम में है। इस तरह की कई ज्ञानवर्धन कार्यक्रमों की शुरुआत संसद टीवी के माध्यम से विशेषतः हिंदी भाषा में किया गया है जो इस प्रकार है- इतिहास के पन्नों से, संविधान, RSTV विशेष, आदि| इसके अतिरिक्त ऐसे कई टीवी चैनलों के माध्यम से हिंदी भाषी कार्यक्रम हमारे ज्ञानवर्धन हेतु समय-समय पर लायें गए हैं जो एक बड़े मानव समुदाय के मध्य अपनी गहरी छाप छोड़ी है जैसे- 'प्रधानमंत्री' टीवी शो शेखर कपूर की मेजबानी में भारतीय रियासतों के विलय से लेकर देश के अलग-अलग प्रधामंत्री चुनने की कथा है जिसकी मूल भाषा हिंदी है। हिंदी भाषी 'रक्तरंजित' टीवी कार्यक्रम,भारतवर्ष, हमारा संविधान इत्यादि।

अतः इस प्रकार हम कह सकते है कि इन धारावाहिकों के माध्यम से आज भी हिंदी भाषा को पुनर्स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। हिंदी भाषा विकास की प्रक्रिया में हिंदी धारावाहिकों की भाषा प्रवीणता समझी जा सकती है। दूरदर्शन निर्देशकों द्वारा अपना-अपना योगदान हिंदी भाषी धारावाहिकों के माध्यम से दिया जा रहा है। संक्षेप में कहा जाए तो हिंदी भाषी धारावाहिकों ने समय के साथ चलते हुए और नूतनता के अनुरोध को अपनाते हुए सामाजिक अपरिहार्यता के तहत हिंदी भाषा विकास का कार्य नितांत सन्नध्दता, वैज्ञानिकता और दूरदृष्टि के साथ किया जा रहा है। दूरदर्शन के क्षेत्र में हिंदी भाषा का अत्यधिक महत्व है। विश्वभर में उपलब्ध ज्ञान और शोध को आमजनमानस तक पहुँचाना आज बेहद आवश्यक है जिसके लिए दूरदर्शन के द्वारा हिंदी भाषा में लोगों के मध्य नवीनतम जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है। दूरदर्शन के माध्यम से हिंदी भाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी समृद्ध किया जा रहा है। अतः हिंदी के प्रचार-प्रसार में दूरदर्शन का योगदान अतुल्यनीय रहा है। हिंदी भाषी क्षेत्रों में दूरदर्शन ने हिंदी को जीवनदान दिया है।

संदर्भ सूची :

1. https://www.hindawidictionry.com05/08/2023
2. https://www.prabhasakshi.com29/08/2023
3. https://rajbhasha.gov.in>file>30/08/2023
4. https://m.bharatdiscovery.org>dooradarshan>2/09/2023
5. https://www.bbc.com>aakashavaaniaurdooradarshankarochakitihaas>2/09/2023

****